VIDYA
UNIVERSITY PRESS

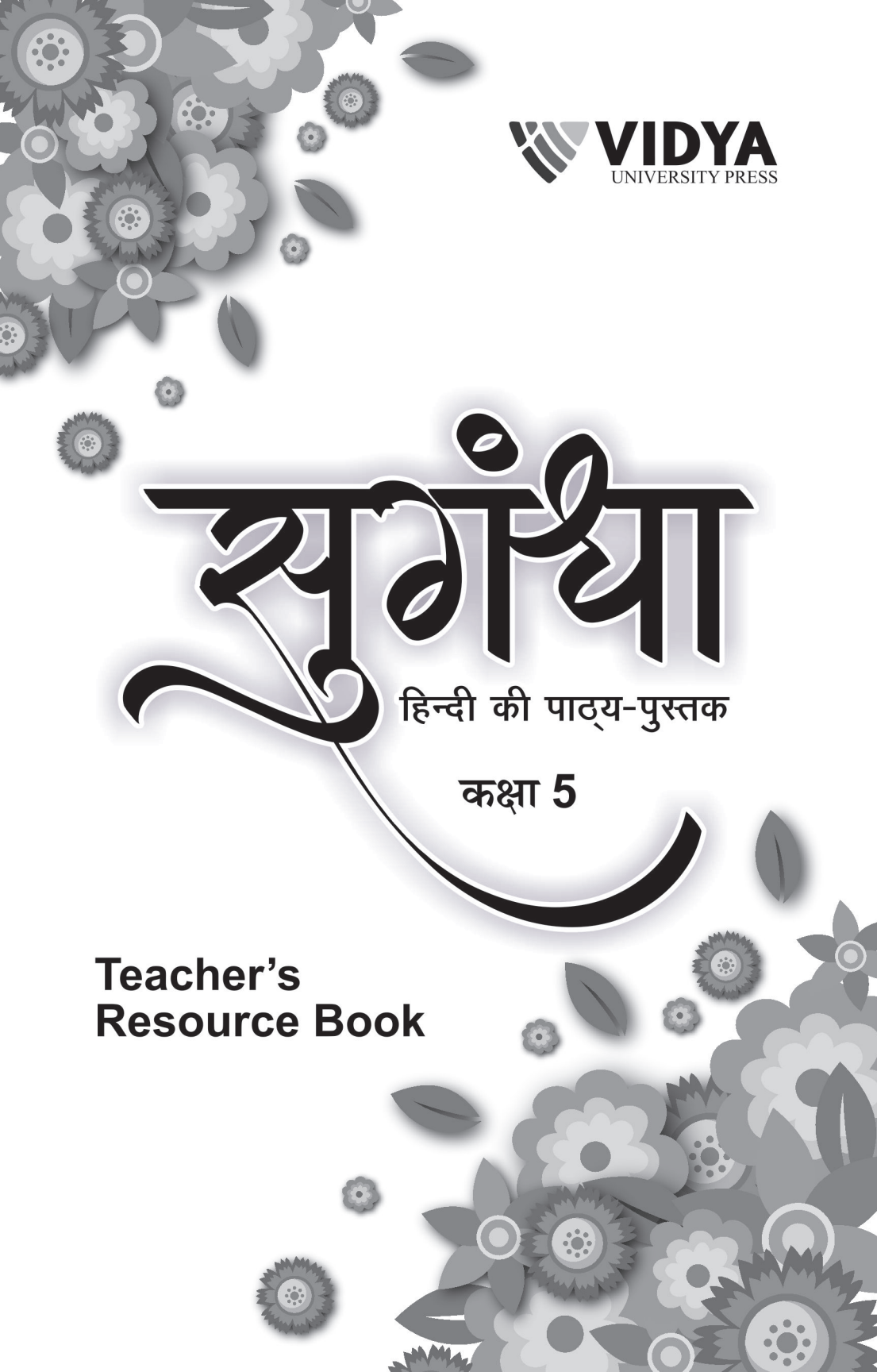

सुगंधा

हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक

कक्षा 5

Teacher's Resource Book

सुगंधा–5

1. दया करो हे दयालु भगवान!

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i)

2. झगड़ों, ईर्ष्या–द्वेष, कष्ट, सुख–समृद्धि

3. प्रस्तुत पंक्तियों में बच्चे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हम भारत के नन्हें बच्चे आपसे ऐसा वरदान चाहते हैं जिससे हम जात–पात के भेद को भुलाकर, छुआछूतरूपी भूत को भगाकर तथा ऊँच–नीच के भाव को मन से दूर हटाने में सफल हो सकें और प्रेम के सूत्र में बँध जाएँ।

4. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (ii)

5. (क) बच्चे भगवान से वरदान माँग रहे हैं।
(ख) भारत के बच्चे समाज में फैले भेदभाव तथा ईर्ष्या–द्वेष को दूर करना चाहते हैं।
(ग) बच्चे भारत माँ का कष्ट दूर करना चाहते हैं।
(घ) बच्चे देश की सेवा करके अपना जीवन सफल बनाना चाहते हैं।

❐ व्याकरण-बोध

6. जात–पात ऊँच–नीच
प्रेम–सूत्र ईर्ष्या–द्वेष
सुख–समृद्धि कर्त्तव्य–मार्ग

7. (क) दयालु (ख) देवता (ग) प्रेम (घ) माँ
(ङ) सुख–समृद्धि (च) जीवन

8. (क) हमें किसी से भी ईर्ष्या–द्वेष नहीं करना चाहिए।
(ख) आज हमारा भारत सभी क्षेत्रों में समृद्धि कर रहा है।
(ग) भगवान की आराधना करने से व्यक्ति भवसागर से पार हो जाता है।

❐ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

2. राख की रस्सी

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii)

2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓

3. (क) तिब्बत के मंत्री को यह चिंता थी कि उनका बेटा बहुत भोला था। उसमें होशियारी बिल्कुल भी नहीं थी।

(ख) मंत्री ने अपने बेटे को उसकी बुद्धि परखने के लिए शहर भेजा था जिससे वह यह जान सके कि उनका बेटा उनके बाद खुश रहकर जीवन गुजार सकेगा या नहीं।

(ग) मंत्री ने तीसरी बार अपने बेटे को इसलिए शहर भेजा, क्योंकि वह उस लड़की की बुद्धि की परीक्षा लेना चाहता था, जिसने दो बार उसके लड़के की मदद की थी।

(घ) शहर में मंत्री के बेटे की सहायता एक समझदार लड़की ने की।

(ङ) **पहली समस्या** का हल—लड़की ने सौ भेड़ों के बाल उतारे और उनको बाजार में बेच दिया जिससे प्राप्त धन से उसने जौ के सौ बोरे खरीदे तथा भेड़ों और बोरों के साथ लड़के को घर भेज दिया। **दूसरी समस्या** का हल—लड़की ने सौ भेड़ों के सींग कटवाए और उनको बाजार में बेच दिया जिससे प्राप्त धन से उसने जौ के सौ बोरे खरीदे तथा भेड़ों और बोरों के साथ लड़के को घर भेज दिया।

❐ व्याकरण-बोध

4.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**
लेह	शहर
शेरवानी	वेशभूषा
खिचड़ी	भोजन
ताँबा	धातु

5. (क) चालाकी — चालाक + ई (ख) दुखी — दुख + ई

(ग) होशियारी — होशियार + ई

6. (क) जिंदगी चैन से चल रही थी।

(ख) उसे होशियारी छूकर भी नहीं गई थी।

(ग) इसका हल मैं निकाल देती हूँ।

(घ) मंत्री की चालाकी धरी रह गई।

❐ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

3. अपशकुन

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iv)

2. (क) विज्ञापन (ख) डाक-विभाग (ग) अंधविश्वास (घ) अपशकुन (ङ) रास्ता काटने

3. (क) (v) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i) (ङ) (iii)

4. (क) नीरज और गोपाल डाक विभाग के कार्यालय जा रहे थे, क्योंकि उन्हें नौकरी के संबंध में इंटरव्यू के लिए बुलाया गया था।

(ख) घर से निकलते ही गोपाल ने बहन के छींकने के कारण कहा कि अपशकुन हो गया।

(ग) गोपाल अपशकुन के चक्कर में पड़कर अंधविश्वास के कारण बीच रास्ते से ही लौट आया।

(घ) एवं (ङ) विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) भरा (ख) करते हो (ग) जाना पड़ेगा (घ) मिल गई है (ङ) उड़ाएगा

6. (क) मजाक उड़ाना—रामू अपने मित्र श्यामू के मोटे शरीर की सदैव खिल्ली उड़ाता था।

(ख) नौकरी हाथ से निकलना—मोहित अपने कार्यालय में रिश्वत लेते पकड़ा गया जिससे उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

7. (क) वि **ज्ञाप** न (ख) वि **श्वा** स (ग) श **कु** न (घ) **वि** पदा (ङ) विभा **ग**

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

4. सौर ऊर्जा

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iv)

2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗

3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (v)
(ङ) (i)

4. (क) प्रकृति (ख) भंडार (ग) गाड़ियाँ (घ) लाभ

5. (क) सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा को 'सौर ऊर्जा' कहते हैं।
(ख) हमें लकड़ी, कोयला, तेल तथा बिजली आदि स्त्रोतों से ऊर्जा मिलती है।
(ग) सौर ऊर्जा अन्य ऊर्जा-स्त्रोतों से इसलिए उत्तम है, क्योंकि यह प्रदूषणरहित है।
(घ) सौर ऊर्जा का प्रयोग खाना बनाने, पानी गर्म करने, मसालों को सूखाने, सागर के खारे पानी को पीने योग्य बनाने एवं कल-कारखाने चलाने आदि कार्यों के लिए हो सकता है।
(ङ) सौर ऊर्जा भारत के लिए अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसके ज्यादा-से-ज्यादा इस्तेमाल करने से पेट्रोल, डीजल आदि की बचत होगी जिससे हम विदेश गमन से मुद्रा को बचा सकेंगे।
(च) सौर ऊर्जा प्रदूषणरहित है। यह दूसरे ऊर्जा स्त्रोतों से सस्ती है तथा नए कल के लिए नव ऊर्जा के स्त्रोत समाप्ति की ओर होंगे तो यह उपयोगी सिद्ध होगी।

❐ व्याकरण-बोध

6.

असीमित	अभिशाप
अस्वस्थ	प्राचीन
दुर्भाग्यशाली	सीमित

7. (क) पर, का (ख) के, के लिए, को
(ग) में (घ) का
(ङ) के, से

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

5. बंद करो तकरार

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (iii)

2. तकरार, रातें, बोई, मानो

3. (क) हमें आपसी भेदभाव को त्याग देना चाहिए।
(ख) स्वच्छ हृदय में प्यार होता है।
(ग) हमें सभी से अच्छा व्यवहार करना चाहिए।
(घ) समाज के जीवन का आधार आपसी मेलजोल है।
(ङ) कवि दूसरों को अपनाने की बात कह रहा है।
(च) कवि ऊँच-नीच, जात-पाँत, छुआछूत, ईर्ष्या-द्वेष तथा स्वार्थ जैसी दीवारें तोड़ने की बात कह रहा है।

❐ व्याकरण-बोध

4.

विशेषण	**विशेष्य**
पुरानी	बात
स्वच्छ	हृदय
अच्छा	व्यवहार
ऊँची	दीवार
बंद	गली
अपना	मुहल्ला

5. बंद करो आओ गाओ

❐ योग्यता-विस्तार

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

6. कभी मिजोरम भी आओ

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (i)

2. (क) **आशय**—मिजोरम की प्राकृतिक सुषमा को देखकर ऐसा लगता है मानो यहाँ की प्रकृति को आधुनिक रूप में तराशा गया है अर्थात् जब प्रकृति में कुछ नयापन आ जाता है तो वह और भी सुंदर प्रतीत होने लगती है।

(ख) **आशय**—मिजोरमवासियों की कपड़ों पर की गई हस्तशिल्पकारी (चित्रकारी) देखते ही बनती है। जिस चित्रकारी को हम बड़ी गहनता से खोजते रहते हैं उसे वे आदिवासी अपनी कला में बड़ी आसानी से शामिल कर लेते हैं।

3. (क) (iii) (ख) (v) (ग) (iv) (घ) (ii) (ङ) (i)

4. (क) मिजोरम की सीमाएँ म्यांमार, त्रिपुरा, बांग्लादेश, मणिपुर एवं असम प्रांतों व देशों से लगी हुई हैं।

(ख) मिजोरम में तिल, राई, मकई व कसावा प्रमुख कृषि उपज हैं इसके अतिरिक्त अनन्नास, पपीता, संतरा, अदरक, हल्दी एवं कालीमिर्च अन्य पैदावारें हैं।

(ग) मिजोरम के लोकगीतों व लोकनृत्यों की यह विशेषता है कि इनके माध्यम से यहाँ सभी संस्कार, त्योहार तथा रीति-रिवाज जीवंत प्रतीत होने लगते हैं।

(घ) मिजोरम में विशिष्ट अतिथि व मौसम परिवर्तन का स्वागत अपने पारस्परिक बाँस नृत्य से करते हैं।

(ङ) मिजोरम की प्रमुख जनजातियाँ लुसाई, लखेर एवं चकमा हैं। ये जनजातियाँ अलग-अलग धर्मों का अनुसरण करती हैं। इन जनजातियों का कपड़ों पर चित्रकारी करना, बाँसों व बेंतों से सामान बनाना मुख्य व्यवसाय है।

(च) मिजोरम के मुख्य त्योहार चपचार कुट, मिमकुट व थालव फांग हैं। इन त्योहारों की मुख्य विशेषता यह है कि वहाँ के निवासी अधिकांश किसान हैं, जो अपने त्योहारों पर लोकगीत व लोकनृत्य के द्वारा कृषि की झलक दिखाते हैं।

❐ व्याकरण-बोध

5. (क) पूर्व + उत्तर (ख) गौरव + आन्वित

(ग) अधिक + अंश (घ) शीत + अवकाश

(ङ) ग्रीष्म + अवकाश

6. (क) ऐग्रीकल्चर (ख) फ्लोरीकल्चर

(ग) हॉर्टिकल्चर (घ) पिशीकल्चर

7. (क) हठात् अर्थ — हठपूर्वक (ख) बलात् अर्थ — बलपूर्वक

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

7. आत्मविश्वास

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii)

2. बिखेर; पानी; आशा; करने; डाली; नीड़।

3. भावार्थ—कविता की इन पंक्तियों में चिड़िया के माध्यम से कवि हमें आत्मविश्वास और साहसपूर्वक प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि चिड़िया घोंसला गिर जाने पर अपना आत्मविश्वास नहीं खोती। वह पुन: नया घोंसला बनाने का अपने मन में संकल्प करके उस कार्य में जुट जाती है और एक नए घोंसले का निर्माण करती है। अत: हमें चिड़िया से सीखना चाहिए।

4. (क) चिड़िया चोंच में तिनका लाई।

(ख) चिड़िया ने नीड़ बनाने के लिए पहले मकान की खिड़की, उसके बाद वृक्ष की डाली चुनी।

(ग) चिड़िया पर अनेक विपदाएँ आईं—किसी ने उसके तिनकों को बिखेर दिया तथा आँधी ने उसे डराया और सताया।

(घ) चिड़िया के मन में आत्मविश्वास दृढ़निश्चय और हिम्मत के बल पर जगा।

❒ व्याकरण-बोध

5.

आँसू	टपका	आह	निकली
पंख	समेटे	विपदाएँ	टूटीं
अंकुर	फूटे।		

6.

जाते	**लाते**	आती	**जाती**
सताया	**बिखराया**	समेटे	**फूटे**

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

8. यमराज का निमंत्रण

❒ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iv) (ग) (ii)

2. (क) पण्डित गुणगानी ने राजा से (ख) यमदूत ने राजा से
(ग) महामाया ने राजा से (घ) राजा ने यमदूत से

3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓

4. (क) राजा अधिमान सिंह अपने बारे में सबकी राय इसलिए जानना चाहते थे, क्योंकि सभी उसकी झूठी प्रशंसा करते थे, जिन्हें वह सत्य मानकर गर्व महसूस करता था और चाहता था कि मैं अभी बहुत दिनों तक इस राज्य पर राज करूँ।

(ख) राजा को 'अभिमान सिंह' और पंडित को 'गुणगानी' कहना इसलिए सही लगता है, क्योंकि राजा को अपनी झूठी बड़ाई सुनकर अपने ऊपर एवं महसूस होता है। पंडित राजा के झूठे गुणों की प्रशंसा कर उसे गौरवान्वित करता है।

(ग) राजा को अपनी पत्नी, अपने पंडित एवं अपने मंत्री से झूठी प्रशंसा सुनकर अभिमान या भ्रम हो गया था कि उसके जैसा न्यायी, वीर पुरुष, दानी, प्रतापी, ईमानदार एवं धनी धरती पर अन्य कोई नहीं है। इसलिए यमदूत ने राजा की परीक्षा लेकर उसके भ्रम को दूर किया।

(घ) यमदूत ने राजा से शर्त रखी, यदि उसके मरने से राज्य के तीन व्यक्ति भी दुखी हो गए, तो वह उसे छोड़ देगा।

(ङ) यमदूत ने राजा की परीक्षा लेने के लिए धर्मराज का वेश धारण किया।

(च) विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) अभिमान करने वाला (ख) गुणों का गान करने वाला
(ग) माया का लोभ रखने वाली (घ) कृपा में पलने वाला

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

7. (क) और (ख) कि (ग) यदि

8.

ब्राह्मणी	बाल	वधू
हाथी	बुद्धिमान	सुता
वीर	विद्वान	कवयित्री
शिक्षिका		

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

9. अपना स्थान स्वयं बनाएँ

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (i) (ग) (iii) (घ) (ii)

2. (क) कृतज्ञता (ख) कोठरी (ग) शिकायत (घ) सजावट

3. (क) क्योंकि उस युवक ने अपने बादशाह की सेवा करने के अवसर को प्राप्त करना उस अच्छी नौकरी से कहीं बढ़कर समझा।

(ख) युवक ने सबसे बड़ा वेतन अपने बादशाह की सेवा करने को कहा, क्योंकि अपने राज्य और राजा की सेवा करना व्यक्ति का परम कर्त्तव्य है।

(ग) बादशाह ने अपने राज्य का वित्तमंत्री मंत्री के साथ आए युवक को बनाया।

(घ) चुगलखोरों ने युवक को बादशाह की नजरों से गिराने के लिए उसकी शिकायत की कि वह खजाने का रुपया लुटा रहा है।

(ङ) वित्तमंत्री रात के दो बजे एक चौकी पर बैठे दीए की रोशनी में कर-वसूली के कागजात देख रहे थे।

(च) वित्तमंत्री ने राजा से एक पैसा इसलिए नहीं लिया, क्योंकि वह उस एक पैसे की पूछताछ करना चाहता था जिससे अफसरों के काम में ढील और मन में बेईमानी न पैदा हो सके।

❐ व्याकरण-बोध

4. उन्नति, पच्चीकारी, गुस्से, लज्जित

5. कृतज्ञ, वित्तमंत्री, खजांची, विश्वसनीय,

6. (क) भीतर (ख) धीरे-धीरे (ग) दिनभर (घ) इधर-उधर
(ङ) प्रेमपूर्वक

7. उन्नति = उ + न् + न् + अ + त + इ
ध्यान = ध् + य् + आ + न् + अ
रत्न = र् + अ + त् + न् + अ
शिकायत = श + इ + क् + आ + य् + अ + त् + अ
दफ्तर = द् + अ + फ् + त् + अ + र् + अ

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

10. माँ की तीन आज्ञाएँ

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iv)

2. (क) धर्म (ख) विराग (ग) माता (घ) चावल (ङ) आज्ञा

3. (क) **भाव**—यदि व्यक्ति का काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकाररूपी डाकू से बचने के लिए सत्संग का, सत् विचार का, सत् आहार का और सत् आचाररूपी किला बनाकर रहेगा तो ये डाकू उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

(ख) **भाव**—यदि व्यक्ति दिन-भर परिश्रम और योगाभ्यास करेगा तब उसे भूख लगेगी। और वह जो भी रूखा-सूखा खाएगा उसी में उसे रसभरे पकवानों का स्वाद आएगा।

(ग) जब व्यक्ति के विचार अच्छे होंगे और कड़े परिश्रम, योगासनों एवं ध्यान लगाने से उसका मन थक जाएगा, तो उसे अवश्य ही गहरी नींद आएगी। नींद थकावट के कारण आती है, न कि विलासिता के कारण।

4. (क) गुरु गोरखनाथ बहुत पहुँचे हुए महापुरुष थे। एक बार वे राजा गोपीचंद के महल में पहुँचे।

(ख) गुरु गोरखनाथ के उपदेश सुनकर गोपीचंद के मन में विराग उत्पन्न हो गया।

(ग) गोपीचंद की माँ की तीन आज्ञाएँ निम्नलिखित थीं—

(i) पहली आज्ञा यह थी कि जैसे वह महल में सुरक्षित होकर रहता था वैसे ही बाहर भी रहना।

(ii) दूसरी आज्ञा यह थी कि जैसे महल में नाना प्रकार के भोजन स्वाद से खाया करता था वैसे ही जंगल में खाना।

(iii) जिस प्रकार महल में दासियों की मधुर ध्वनि सुनकर गहरी नींद में सो जाता था, उसी प्रकार वन में भी गहरी नींद सोना।

(घ) गोपीचंद बड़े ही संस्कारी, धर्म के प्रति आस्था और अपनी माता के आदेशों का पालन करने वाले व्यक्ति थे।

(ङ) इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हमारे सबसे बड़े शत्रु हैं। इनको जीतकर ही हम सुखी और सुरक्षित रह सकते हैं।

❐ व्याकरण-बोध

5.

उद्देश्य	विधेय
(क) गुरु गोरखनाथ	घूम-घूमकर उपदेश दिया करते थे।
(ख) महाराज	मातृभक्त थे।
(ग) गोपीचंद	राज्य त्यागकर संन्यासी हो गए।

(घ) संन्यासी बनकर राजा — देश-देश में घूमते हुए अलख जगाने लगे।

(ङ) गोपीचंद की माँ ने — एक-एक करके चावल के तीन दाने उसके भिक्षा-पात्र में डाल दिए।

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

7. (क) संन्यास ले लो (ख) खाना खा लो
(ग) पानी पी लो (घ) छाता ले लो

8. (क) क्या गोपीचंद महल में रहते थे?
(ख) राजा गोपीचंद की धर्म में गहरी रुचि थी।
(ग) अरे! गोपीचंद तूने संन्यास ले लिया है।
(घ) क्या तू भिक्षा लेने आया है?
(ङ) हाँ, माँ! तेरा बेटा अब भिक्षुक है।

9. (क) माता का भक्त, प्रभु का भजन, भिक्षा का पात्र, गंगा का जल।
(ख) योग + आसन, परम + आत्मा, सत्य + आग्रह, शुभ + आगमन।

❒ योग्यता-विस्तार

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

11. नीति के दोहे

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (ii)

2. (क) गँवाई दिवस अमोल कौड़ी
(ख) कन-कन, निबरै, घट, टपकत
(ग) प्रेम, तोड़ो, टूटे, गाँठ

3. (क) **भाव**—बिना परिश्रम के कोई भी व्यक्ति विद्यारूपी धन प्राप्त नहीं कर सकता।
(ख) **भाव**—मुसीबत के समय जो साथ दे वही सच्चा मित्र है।

4. (क) कबीरदास जी गुरु और भगवान में पहले गुरु के चरण छूना चाहते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि गुरु ने ही भगवान को प्राप्त करने का मार्ग बताया है।

(ख) विपत्ति के समय काम आने वाले मित्र के प्रति हमारा व्यवहार एक सच्चे मित्र की भाँति होना चाहिए।

(ग) कवि ने प्रेम को धागा इसलिए बताया है कि, क्योंकि जिस प्रकार धागे के टूटने पर उसे दोबारा जोड़ने पर उसमें गाँठ पड़ जाती है उसी प्रकार प्रेम एक ऐसा धागा है जो एक बार टूटने पर उसे दोबारा जोड़ने पर उसमें भी गाँठ पड़ जाती है।

(घ) मधुर वचन बोलने से किसी का गुस्सा उसी प्रकार ठंडा हो जाता है जिस प्रकार दूध को गर्म करते समय उसमें आए उफान को ठंडे पानी से शांत किया जाता है।

(ङ) बोली को अमोल इसलिए कहा गया है, क्योंकि व्यक्ति को बोलते समय अपनी वाणी से मधुर शब्द बोलने चाहिए। इसी वाणी से हम पराए व्यक्ति को अपना बना सकते हैं।

❒ व्याकरण-बोध

5. गुरु — अध्यापक, शिक्षक | गोबिंद — ईश्वर
अभिमान — गर्व, अहंकार | दूध — दुग्ध
दिवस — दिन | विपत्ति — मुसीबत

6. काके — किसके | पौन — हवा
पावै — पाना | जुरै — जुड़ना
बोलै — बोलना | कन-कन — कण-कण

7. (क) पाय — (पैर)
(ख) घट — (घड़ा)
(ग) संपत्ति — (धन)
(घ) साँचे — (सच्चा)
(ङ) मीत — (मित्र)

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

12. अर्जुन का मोह-भंग

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (iii)

2. (क) वीरों, (ख) मोह, (ग) अधर्म, (घ) अमर, (ङ) भंग।

3. **श्रीकृष्ण**—इस एकांकी में श्रीकृष्ण के चरित्र की विशेषता यह है कि वे व्यक्ति के कर्त्तव्य-पालन को सर्वोपरि मानते हैं। इसलिए वे अर्जुन के सारथी बनकर उसे धर्म-युद्ध करने का उपदेश देते हैं।

अर्जुन—अपने सगे-संबंधियों के प्रति मोहवश युद्ध न करने का फैसला करते हैं। परंतु धर्म-पालन के लिए मोह त्यागकर युद्ध करते हैं।

4. (क) शत्रु पक्ष में अर्जुन को पितामह भीष्म, गुरु द्रोण तथा मामा शल्य आदि योद्धा खड़े हुए दिखाई दिए।

(ख) अर्जुन का रथ श्रीकृष्ण जी चला रहे थे। रथ चलाने वाले को सारथी कहते हैं।

(ग) अर्जुन इसलिए युद्ध नहीं करना चाहता था, क्योंकि युद्ध मैंदान में उसके अपने सगे-संबंधी सामने खड़े थे।

(घ) अधर्म पर चलने वालों का नाश करना ही श्रीकृष्ण ने वीरों का धर्म बताया।

(ङ) श्रीकृष्ण ने सच्चा संन्यासी उसे बताया है, जो अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए किसी फल की इच्छा नहीं करता।

(च) श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए उपदेश को सुनकर अर्जुन का मोह-भंग हो जाता है और वह अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए युद्ध करता है।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) मुझसे शस्त्र नहीं उठाया जाएगा।

(ख) मुझसे उसकी निंदा नहीं की जाएगी।

6. गुरु, संबंधी, वीर, सेना, कौरव, पांडव, कायर, बंधु, बांधव।

7. नीति, सच, अपमान, धर्म।

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. जब अर्जुन ने युद्ध करने से मना किया तब श्रीकृष्ण ने उन्हें बताया कि धर्म-युद्ध में किसी प्रकार का मोह करना अच्छा नहीं होता। और वीर पुरुष का धर्म है कि वह अधर्म पर चलने वालों का नाश करे जो क्षत्रिय धर्म का पालन नहीं करता उसकी सर्वत्र निंदा होती है। हे अर्जुन! सच्चा संन्यासी वही है जो अपने कर्त्तव्य का पालन करता है और किसी फल की इच्छा नहीं करता। ऐसा व्यक्ति ही ईश्वर को प्राप्त कर सकता है इसलिए हे अर्जुन! मोह त्यागकर अपने कर्त्तव्य का पालन करो।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

13. भिक्षा-पात्र

❒ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

2. (क) अकाल में सबकी व्याकुलता देखकर महात्मा बुद्ध ने लोगों की मदद करने के लिए नगर के धनी भक्तजनों को बुलाया।

(ख) सुप्रिया भगवान तथागत के प्रिय शिष्य अनाथपिंडद की बेटी थी।

(ग) सुप्रिया की बात सुनकर धनी सेठों ने अपने भंडार सुप्रिया के भिक्षा-पात्र में उलीच दिए। पात्र हमेशा भरा रहने लगा। समस्त नगरवासियों का उद्धार हो गया। किसी अकाल-पीड़ित को भूखा नहीं रहना पड़ा।

(घ) महात्मा बुद्ध ने सुप्रिया को 'तुम्हारा निश्चय पूरा हो!' कहकर आशीर्वाद दिया।

(ङ) नगर के हर आँगन में अनाज पहुँचाने का भार सुप्रिया ने लिया।

❒ व्याकरण-बोध

3.

प्रजा	प्राण	प्रश्न
धर्मपाल	वर्ष	आशीर्वाद

4.

विज्ञान		निर्जन
विशेष		निर्बल
विजय		निर्धन

5. वृद्धा अभागिन शिक्षिका सेठानी

6.

हाथ	कर	शिष्य	चेला	आँख	नेत्र
भगवान	ईश्वर	वर्षा	बारिश	द्वार	दरवाजा
मुख	मुँह	अन्न	अनाज	धरती	वसुधा

7. (क) दयावान (ख) उदार (ग) स्वार्थी

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

14. देशभक्ति

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iv) (ग) (iii)

2. (क) स्वार्थों, (ख) कर्त्तव्य, (ग) मँगेतर, (घ) बपौती।

3. (क) 'देशभक्ति' फूलों की सेज नहीं, काँटों का ताज है, क्योंकि देश की सेवा करते हुए मनुष्यों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

(ख) 'नि:स्वार्थ सेवा' से तात्पर्य बिना किसी निजी लाभ के सेवा करना है।

(ग) डॉक्टर साहब रोगियों के सच्चे हितैषी हैं। वह अपने रोगियों की सेवा में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अपनी भूख-प्यास एवं आराम को भी भूल जाते हैं। वह अपने कर्त्तव्य का पालन बड़ी ही लग्न एवं ईमानदारी से करते हैं।

(घ) लाला जी अपनी राशन की दुकान से अपने सभी ग्राहकों को नियमित रूप से राशन वितरित करते हैं। एक दिन जब उनका पुत्र उन्हें राशन को ब्लैक करने जैसे गलत कार्य करने की सलाह देता है तो लाला जी अपने पुत्र को धिक्कारते हैं और राशन की दुकान में पैर न रखने की धमकी देते हैं, परंतु वह विचलित हुए बिना अपने देश एवं ग्राहकों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन बड़ी ही ईमानदारी से करते हैं।

(ङ) हमें इस पाठ से यह शिक्षा मिलती है कि सभी को अपने कर्त्तव्य का पालन सच्ची निष्ठा एवं ईमानदारी से करना चाहिए।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (v) (घ) (iii) (ङ) (iv)

5. (क) जहरीला, अनुभवी, परिचित, उपयोगी।

(ख) दैनिक, मासिक, साप्ताहिक, वार्षिक।

6. (क) ब्लैक — कुछ सरकारी संस्थान सामान को ब्लैक में बेच देते हैं।

(ख) कमीशन — कुछ व्यक्ति अपना कार्य कमीशन पर करते हैं।

(ग) प्रलोभन — सोहन ने अपना कार्य सरकारी कर्मचारी को कुछ प्रलोभन देकर करा लिया।

(घ) अवांछनीय — हमें कभी-भी अवांछनीय कार्य करके अपने माता-पिता को लज्जित नहीं करना चाहिए।

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. राजनयिक की पत्नी ने यह इसलिए कहा, क्योंकि उनके पुत्र ने लालच के वशीभूत होकर अपने देश की गोपनीय सूचना दूसरे देश के व्यक्ति को देने की बात की थी। अगर यह गोपनीय सूचना दूसरे देश को मिल जाती तो वह हमारे देश को नुकसान पहुँचा सकता था।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

15. बाघ का ब्याह

❒ पाठ-बोध

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

2. (क) शेर ने ब्राह्मण से (ख) ब्राह्मण ने शेर से
(ग) ब्राह्मणी ने शेर से।

3. (क) मनुष्य (ख) ब्राह्मणी (ग) साहस (घ) भूख-प्यास
(ङ) पति-पत्नी।

4. (क) ब्राह्मण ने बाघ को ब्याह का मतलब बतलाया—एक पुरुष और एक स्त्री ब्याह के बाद 'पति-पत्नी' कहलाते हैं।

(ख) जब बाघ मंगलवार के दिन सुबह-सवेरे ब्राह्मण के घर पहुँचा, तो ब्राह्मणी ने उससे कहा, ''मेरे पति बीमार हैं। कुछ दिन बाद आना।''

(ग) ब्राह्मण ने पड़ोसियों के साथ मिलकर बाँस के डंडों का एक पिंजरा तैयार किया और उसे घास से ढक दिया।

(घ) बाघ-बाघिन को साथ देखकर, ब्राह्मण इसलिए बेहोश हो गया क्योंकि उसने सोचा कि इस बार दो बाघ ब्याह कराने आए हैं।

(ङ) बाघ और बाघिन यह सोचकर ब्राह्मण के पास गए थे कि उनकी शादी ब्राह्मण ने ही कराई है इसलिए वे उसका धन्यवाद करना चाहते थे।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) वन, कानन (ख) विप्र, पंडित
(ग) मनुज, मानव (घ) सरिता, तटिनी

6. खुला, शाम, रहित, बेहोश, बाहर, रात, अनिच्छा, बड़ी, मेरा।

7. ब्राह्मण — ब्राह्मणी बाघ — बाघिन पुरुष — स्त्री
देवता — देवी पति — पत्नी पड़ोसी — पड़ोसिन

8. (क) क्षमा (ख) श्रम (ग) त्रिशूल (घ) ज्ञान
(ङ) संज्ञा।

9. (क) प्यार-से, (ख) खुशी-खुशी, (ग) डर, (घ) अंदर,

10. पूरी — समाप्ति घुसा — प्रवेश करना
पूड़ी — भोज्य-पदार्थ घूँसा — प्रहार करना

❒ योग्यता-विस्तार

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. बँदरिया, हथिनी, घोड़ी, कुतिया, ऊँटनी।

13. बड़ा भाई, बड़ा भाई, भैया, भाई।

❒ जीवन-मूल्य

14. विद्यार्थी स्वयं करें।

15. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

16. कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (i)

2. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि हमें आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इसके लिए कवि कहता है कि व्यक्ति को असफलता को चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहिए और यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि इसके पीछे कौन-सी कमी शेष रह गई है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी नींद और चैन को भूल जाइए और सामने आने वाली मुसीबतों से मत घबराइए, उनका डटकर मुकाबला कीजिए, क्योंकि बिना संघर्ष किए विजय हासिल नहीं होती। और यह बात स्मरण रखिए कि कोशिश करने वालों को एक-न-एक दिन सफलता अवश्य मिलती है।

3. सिंधु, लौटकर, मोती; पानी, उत्साह; हैरानी, खाली, कोशिश; हार।

4. (क) नन्हीं चींटी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

(ख) गोताखोर अनेक बार खाली हाथ लौटने पर भी समुद्र में डुबकियाँ इसलिए लगाता है, क्योंकि उसे विश्वास है कि उसके हाथ हर बार समुद्र से खाली नहीं आएँगे।

(ग) कवि हमें यह सन्देश देता है कि हमें विफलता (असफलता) को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि हममें क्या कमी रह गई है, उसे दूर करके सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) गोताखोर = गोता + खोर = डुबकी लगाने वाला
आदमखोर = आदम + खोर = नरमांस खाने वाला
सूदखोर = सूद + खोर = ब्याज से जीविका चलाने वाला
हरामखोर = हराम + खोर = हराम की चीजें खाने वाला

(ख) चलना, अखरना, फिसलना, लगाना, भरना, आना।

6. विश्वास = व् + इ + श् + व् + आ + स् + अ
उत्साह = उ + त् + स् + आ + ह् + अ
दीवार = द् + ई + व् + आ + र् + अ
चुनौती = च् + उ + न् + औ + त + ई

7. (क) पर (ख) में (ग) ने (घ) का (ङ) से

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

17. पानी रे पानी

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (i)

2. (क) भूगोल (ख) हक (ग) पहलू
(घ) गुल्लक, प्रकृति (ङ) जल-भंडार (च) समतल

3. (क) बहुत सस्ता—केरल में व्यापारियों को नारियल पानी के मोल के बराबर मिलता है।

(ख) तत्काल मर जाना—राम के वनवास जाने की सूचना सुनकर महाराज दशरथ को पानी न माँगना पड़ा।

(ग) शर्मिन्दा करना—हमारे गणित अध्यापक के लड़के ने गणित विषय में सबसे कम नम्बर लाकर उन्हें समस्त स्टाफ के सामने पानी-पानी कर दिया।

(घ) बर्बाद कर देना—सेठ जी की बीमारी के दौरान उनके लड़के ने अपने पिता का कारोबार हाथ में लेकर उस पर पानी फेर दिया।

(ङ) शांति भंग करना—कुछ असामाजिक तत्त्व हमारे समाज में पानी में आग लगाने का प्रयास करते हैं।

(च) मर्यादा की रक्षा करना—यदि कोई योद्धा पानी रखता तो द्रौपदी का भरी सभा में चीर-हरण न होता।

(छ) बेइज्जती होना—भरी सभा में द्रोपदी का चीर-हरण देखकर पांडवों का पानी उतर गया।

(ज) बेइज्जत करना—दीनदयाल जी ने भरी सभा में मुखिया जी की पोल खोलकर उनका पानी उतार दिया।

4. (क) गर्मी के दिनों में घरों में पानी की बड़ी किल्लत हो जाती है। नल सूख जाते हैं, पानी आता भी है तो वक्त-बेवक्त आता है। देश के कई भागों में तो अकाल की स्थिति बन जाती है।

(ख) बरसात के मौसम में अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है। हमारे आस-पास घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर भी पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं।

(ग) धरती को 'गुल्लक' इसलिए कहा गया है, क्योंकि हमारी यह धरती भी एक बड़ी गुल्लक के समान है। प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है, उस पानी को हम तालाबों, झीलों में एकत्र कर लेते हैं जिससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध हो जाता है। बरसात के मौसम के बाद हम इस भूजल को पूरे वर्ष उपयोग में लाते हैं।

(घ) बड़ी संख्या में इमारतें बनने से बाढ़ और अकाल की स्थिति पैदा हो जाती है, क्योंकि हमने अपने स्वार्थ के लिए तालाबों को पाटकर समतल बना दिया। बरसात का जो पानी तालाबों में एकत्र होता वह गर्मी के दिनों में उपयोग में लाया जा सकता था, जिससे बाढ़ और अकाल पर हम कुछ नियंत्रण कर पाते।

(ङ) तालाबों और झीलों को सुरक्षित रखकर हम भूजल भंडार को सुरक्षित रख सकते हैं।

(च) पाठ में जलचक्र के महत्त्व को समझकर अपने आास-पास के जलस्रोतों, तालाबों और नदियों को सुरक्षित रखकर पानी के संकट से मुक्ति (बचने) की बात की गई है।

(छ) ''अपने घर के नल-पाइप में मोटर लगवाना दूसरों का हक छीनने के बराबर है।'' लेखक ऐसा इसलिए मानते हैं, क्योंकि जब नल-पाइप में मोटर लगा दी जाती है तो वह दूसरों के हिस्से का पानी भी खींच लाती है और अन्य लोग जो उस पानी के वास्तविक हकदार हैं, वे पानी से वंचित रह जाते हैं।

❒ योग्यता-विस्तार

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

18. जहाँ चाह वहाँ राह

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iv) (ग) (iv)

2. (क) पेंगें, (ख) चुनौती, (ग) दंग, (घ) झुकने, (ङ) विश्वास; धैर्य।

3. (क) इला सचानी कशीदाकारी का काम करती है।

(ख) इला को परीक्षा के लिए उस जैसे व्यक्ति को अतिरिक्त समय मिलने की जानकारी नहीं थी।

(ग) इला ने कशीदाकारी का काम अपनी दादी और माँ से सीखा।

(घ) इला की कशीदाकारी में खास बात यह थी कि उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों में उसकी मातृभूमि के साथ-साथ कई अन्य शहरों की संस्कृतियाँ भी झलक रही थीं। पत्तियों को चिकनकारी से सजाया था। डंडियों को कांथा से उभारा था। पशु-पक्षियों की ज्यामितीय आकृतियों को कसूती और जंजीरों से उठा रखा था। ये डिजाइनें सभी को आकर्षित कर रही थीं।

(ङ) नहीं; इला अपने पैर के अँगूठे से कुछ भी करना कभी न सीख पाती, अगर उसके आस-पास के लोग उसके लिए काम स्वयं कर देते और उसको कुछ करने का मौका नहीं देते।

(च) इस पाठ में ऐसे कई खेलों के नाम आए हैं, जिन्हें बच्चे खेलते हैं; वे हैं—पत्तों से पिटपिटी बजाना, गिट्टे खेलना, पिट्ठू खेलना, झूला झूलना, पकड़म-पकड़ाई, विष-अमृत के खेल।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) जब इन खेलों से मन ऊब जाता तो पेड़ की ऊँची डालियों पर झूला झूलते।

(ख) वह बहुत कोशिश करती पर उसके हाथ उसका साथ न देते।

(ग) किसी काम को वह इतनी फुरती से कर जाती कि देखने वाले चकित रह जाते।

(घ) इला परेशानियों के आगे हार मानने वाली न थी।

(ङ) दोनों अँगूठों के बीच में सुई दबाकर कच्चा रेशम पिरोना आसान काम नहीं था।

(च) इला अपने हुनर के प्रति गर्व और खुशी महसूस करती है।

5. (क) इन बेल-बूटों को इला सचानी ने सजाया था।

(ख) कढ़ाई के ये नमूने इला की हिम्मत की अनूठी मिसाल हैं।

(ग) जो हम हाथों से करते हैं उसने वह सब अपने पैरों से करना सीखा।

(घ) इला को समय रहते यह जानकारी मिल जाती है तो कितना अच्छा रहता।

❒ योग्यता-विस्तार

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

19. सच्ची जीत

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (i)

2. (क) गाँव वालों ने दयाराम से (ख) शेरसिंह ने दयाराम से
(ग) दयाराम ने शेरसिंह से (घ) शेरसिंह ने दयाराम से

3. (क) अभिमानी, दुष्ट (ख) आदर
(ग) खरबूजा (घ) गाड़ी
(ङ) अच्छाई

4. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (v) (ङ) (iii)

5. (क) गाँव के लोग शेरसिंह से इसलिए नहीं बोलते थे क्योंकि शेरसिंह अभिमानी और दुष्ट प्रकृति का था।

(ख) दयाराम का स्वभाव नम्र था।

(ग) शेरसिंह दयाराम के खेत में कभी अपने बैल छोड़कर, कभी उसके खेत में जाने वाली पानी की नाली को तोड़कर उसे हानि पहुँचाता था।

(घ) एक बार बरसात के मौसम में शेरसिंह की अनाज की भरी गाड़ी दलदल में फँस गई। उसके कमजोर बैल बैलगाड़ी को दलदल से बाहर न निकाल सके। उस संकट के समय दयाराम ने अपने मजबूत बैलों द्वारा अनाज से भरी गाड़ी को दलदल से बाहर निकाल दिया। उस घटना ने शेरसिंह के व्यवहार में परिवर्तन ला दिया।

(ङ) इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि बुराई को भलाई से जीता जा सकता है।

(च) विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ व्याकरण-बोध

6. सर्वनाम शब्द	**सम्बन्धित संज्ञा शब्द**
तुम	दयाराम
वह	शेरसिंह
उसे	शेरसिंह

7.

शब्द	विपरीत शब्द	शब्द	विपरीत शब्द
भला	बुरा	सुबह	शाम
अपकार	उपकार	अपने	पराये
जीत	हार	भीतर	बाहर
हानि	लाभ	पास	दूर
कमजोर	बलवान	सच्चा	झूठा

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

20. खान-पान में स्वच्छता

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii)

2. (क) 3 (ख) × (ग) × (घ) 3 (ङ) 3

3. (क) (iii) (ख) (v) (ग) (i) (घ) (ii) (ङ) (iv)

4. (क) देश में हाल ही में फैली प्लेग की बीमारी का मुख्य कारण गंदगी को बताया गया है।

(ख) लेखक ने खान-पान में स्वच्छता का महत्त्व अन्य वस्तुओं में स्वच्छता से कहीं अधिक इसलिए कहा है, क्योंकि इसका सीधा असर हमारे शरीर पर पड़ता है।

(ग) खुली चाट खाने से इसलिए परहेज करना चाहिए, क्योंकि उस चाट पर मक्खियाँ भिनकती रहती हैं जिससे हैजा नामक बीमारी हो जाती है।

(घ) गाँवों के कुओं में बाहर से खरपतवार गिरता रहता है जिसके सड़ने से पानी प्राय: दुर्गंधयुक्त हो जाता है।

(ङ) हमें खान-पान में निम्नलिखित सावधानी बरतनी चाहिए—

(i) हमें सदैव फल एवं सब्जियों को धोकर खाना चाहिए।

(ii) हमें खुली चाट-पकौड़ी या मिठाई नहीं खानी चाहिए।

(iii) हमें सदैव स्वच्छ पानी का प्रयोग करना चाहिए।

(iv) कभी किसी का जूठा खाना या पानी नहीं पीना चाहिए।

❒ व्याकरण-बोध

5. छिपना — सूर्य पश्चिम में अस्त होता है।
काम में लग्नशील — राहुल अपने काम में पूरे दिन व्यस्त रहता है।

6. जूट — रस्सी, बोरी आदि जूट से बनाए जाते हैं।
जुट — खेतों की जुताई के लिए बैलों की जुट होती है।
मात्र — राम के पास मात्र बीस रुपए हैं।
मातृ — मातृ (माता) अपने बच्चों को बहुत प्रेम करती है।
खाद — पेड़-पौधों को तैयार करने के लिए खाद का प्रयोग किया जाता है।
खाद्य — हमें साफ-सुथरे खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

7. (क) फलदार (ख) खबरदार (ग) दुकानदार (घ) समझदार (ङ) मालदार

8. (क) के (ख) से (ग) के

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑